कोई जवाब नहीं

देवता में शंकर का
कामाख्या के मंतर का
कोई जवाब नहीं।
कृष्ण सुदामा मेल का
अलीपुर के जेल का
गँवई सरसों तेल का
कोई जवाब नहीं।
अंडाल में पंडाल का
काशी में चंडाल का
मकड़ी के जंजाल का
कोई जवाब नहीं।
कपड़ा में खादी का
काश्मीर के बादी का
बेटी के शादी का
कोई जवाब नहीं।
स्टेशन में हावड़ा का
लिट्टी चोखा छपरा का
रोटी में बाजरा का
कोई जवाब नहीं।
पुराने फिल्म गीत का
अग्रहन माह के शीत का
राधे-कृष्ण के प्रीत का
कोई जवाब नहीं।
अलीगढ़ के ताला का
फिल्मी बैजंती माला का
अस्त्र में भाला का
कोई जवाब नहीं।
जौ के बाली का
बाग़ में माली का
कान में बाली का
कोई जवाब नहीं।

राम नरेश साव (हिन्दी टंकक),
हिन्दी कक्ष, प्रशासन विभाग

वृक्ष

महादेव ने विष-पान किया
प्राणियों का कल्याण किया।
यदि महादेव को पाना है
अपने वनों को बचाना है।
वृक्ष करके विषपान
देते प्राण-वायु का दान ।
क्यूँ न पूजू इन वृक्षों को
ये साक्षात हमारे शंकर भगवान।

दीप चंद यादव
लिफ्ट ड्राईवर, प्रशासन विभाग

शिक्षा का व्यवसायीकरण

"विद्या ददाति विनियम"

अर्थात विद्या ही विनम्रता की कुंजी है। विद्याधन एक ऐसी पूंजी है जो बांटने से बढ़ती है विद्यार्जन करने से न केवल हमारे व्यक्तित्व में निखार आता है अपितु हमारे भविष्य निर्माण में भी महत्वपूर्ण सीढ़ी है।

हमारे देश में शिक्षा के क्षेत्र का क्या महत्व है ये किसी को बताने की जरूरत नहीं है। भारत के करोड़ों बच्चे हर सुबह अपना बस्ता लेकर स्कूल जाते है। हर माता-पिता की यह तमन्ना रहती है कि उनका बच्चा पढ़-लिख कर एक काबिल इंसान बने और खूब नाम रौशन करें। इन सपनों को पुरा करने में स्कूल और हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था बहुत बड़ी भूमिका निभाती है।

किसी भी देश की संपन्नता उस देश की जनसंख्या के साक्षरता अनुपात पर निर्भर करती है। यद्यपि संपन्नता के लिए साक्षरता के अलावा अनेकों अन्य कारण भी होते है लेकिन यह पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि बिना शिक्षा के किसी देश, राज्य, समाज या परिवार की प्रगति संभव नहीं है। शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान है, क्योंकि शिक्षा ही सभ्यता एवं संस्कृति के निर्माण में सहायक होती है और मानव को अन्य प्राणियों की तुलना में श्रेष्ठ बनाती है।

लेकिन विडंबना यह है कि लोगों के जीवन को गढ़ने वाली यह पाठशाला आजकल एक ऐसा व्यवसाय का रूप ले चुकी है जिसने अच्छी शिक्षा को पैसों वालों की बपौती बना कर रख दिया है। यहां तो अब साधारण तथा मध्यमवर्गीय परिवार बस बड़े स्कूलों को दूर से ही टकटकी लगाकर देखते है और सोचते हैं कि काश उनका बच्चा भी ऐसे स्कूलों में पढ़ पाता। आज-कल शहरों में तो क्या गाँवों में भी शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है। यदि आँकड़ों को देखा जाए तो सरकारी विद्यालयों में केवल निर्धन वर्ग के लोगों के बच्चे ही पढ़ने के लिए आते है, क्योंकि निजी शिक्षा संस्थानों की फीस के रूप में बड़ी-बड़ी रक़में वसूली जाती है, जिन्हें पैसे वाले ही अदा कर पाते है।

आज अच्छी और उच्च शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है। निजी शिक्षण संस्थानों के संचालक मनमर्जी की फीस वसूल कर रहें हैं या यूँ कहें कि शिक्षा का बाजार लगाकर लूट मचा रखी है। जहां एक तरफ जितनी स्कूल की फीस बढ़ती जा रही है, वहीं दूसरी तरफ उतना ही शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। लेकिन हमने क्या कभी यह सोचा है कि इस सबके लिए कहीं ना कहीं हम सब भी जिम्मेदार है।

पता नहीं हम किस रेस में आगे निकलने की कोशिश कर रहें है। ज्यादातर लोगों की यह सोच है कि शहर का सबसे महंगा स्कूल ही सबसे अच्छा है, और हम अपने बच्चों को उसी महंगे रेस का हिस्सा बना देते है। आज के दौर में मनपसंद स्कूल में प्रवेश लेना ही अपने आप में एक बड़ी चुनौती हो गया है। मध्यवर्गीय परिवार अपने बच्चों को उनकी पसंद की स्कूल में नहीं पढ़ा सकते। आज का आलम यह है कि नर्सरी कक्षा की फीस ही करीब एक लाख रुपये हो गयी है। यदि हमें अच्छे स्कूल में बच्चे को पढ़ाना है तो हमारे बैंक अकाउंट में अच्छी खासी रकम होनी चाहिए। वरना हम अपने बच्चे को अच्छे कहे जाने वाले स्कूल में पढ़ाने का सपना बस एक सपना बन कर ही रह जाएगा।

शिक्षा को आजकल अँग्रेज़ी (विदेशी भाषा) से भी आंका जाने लगा है। जिसको जितनी अँग्रेज़ी आती है उसकी तुलना बहुत बुद्धिमान लोगों में होने लगती है। शिक्षा के व्यापारियों ने शिक्षा को वेस्टर्न कल्चर की तरफ ढ़केल दिया है। आजकल लोगों को अपनी मातृभाषा बोलने में शर्म महसूस होती है तथा अँग्रेज़ी बोलने में गर्व महसूस होता है। इसका दुष्परिणाम यह है कि आज आई. ए. एस., आई. पी. एस. तथा उच्च श्रेणी की परिभाषाओं में गांवों के 10 प्रतिशत विद्यार्थी भी सफल नहीं हो पाते। आज शहरों के संपन्न परिवारों के नवयुवक उच्च सेवाओं में आ रहे है। उन्हें न तो गांव का ज्ञान होता है और न ही गांव के लोगों से किसी प्रकार की हमदर्दी।

फीस न होने के कारण कुछ लोग तो अपने बच्चों को स्कूल भेजने में भी असमर्थ है। फीस तो है ही उसके साथ-साथ पुस्तकें, युनिफॉर्म के ख़र्चे भी बहुत हो गये है। स्कूल का व्यवसाय इतना लाभदेय हो गया है कि स्कूल वालों ने पुस्तक और स्कूल ड्रेस का व्यापार भी करना शुरू कर दिया है। अपने ही रिश्तेदारों को पुस्तक और ड्रेस का ठेका दे देते है ।

शिक्षा का व्यवसायीकरण का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण आज प्राइवेट स्कूल और कोचिंग संस्थान हैं। हर शहर में गली-गली प्राइवेट स्कूल नजर आते है जो अँग्रेज़ी शिक्षा के नाम पर अभिभावकों से मोटी फीस वसूलते हैं। परंतु उनके यहां शिक्षा की गुणवत्ता और अनुभवी शिक्षकों का नितांत अभाव होता है। सरकारी स्कूलों की लचर व्यवस्था के कारण अभिभावक निजी विद्यालयों में बच्चों को पढ़ाने के लिए मजबूर हो जाते है। इसका फायदा संस्थान वालों को होता है। वे उनकी मजबूरी का फायदा उठाते है। इन सब के पीछे सरकारी स्कूल की कुव्यवस्था मुख्य रूप से जिम्मेवार है। सरकार सर्व-शिक्षा अभियान, मिड-डे-मिल इत्यादि के नाम पर प्रत्येक वर्ष करोड़ों रुपये खर्च करती है, शिक्षकों की तनख्वाह भी काफी तगड़ी होती है, बावजूद इसके ये स्कूल अभिभावकों और बच्चों को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाते हैं। ये स्कूल अभी भी पुराने पाठ्यक्रम पर आधारित शिक्षा देते है। पढ़ाने के तरीक़ों पर नित्य नये प्रयोग हो रहे है, वो यहां के शिक्षक अपनाना नहीं चाहते जिस वजह से अभिभावकों को लगता है कि उनके बच्चे प्राइवेट स्कूल के बच्चों से पिछड़ जाऐंगे। यही वजह है, पूंजीपति शिक्षा को व्यवसाय की तरह देखते हैं। जिनके पास पैसा है वे निजी विद्यालय खोलकर बैठ जाते है और मोटी कमाई करते है साथ ही साथ बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करते है।

यही हाल उच्च शिक्षा में कोचिंग संस्थानों का है। इंजिनीयरिंग और मेडिकल कलेजों में प्रवेश हेतु ये कोचिंग संस्थान शत-प्रतिशत सफलता की गारंटी देते है, इनके फीस बहुत ही ज्यादा होते है। मध्यमवर्गीय अभिभावक इसे पूरा करने के लिए दिन रात एक कर के काम करते हैं। क्योंकि उन्हें अपने बच्चों का भविष्य यहीं से पूरा होते दिखता है। इसीलिए वो भारी से भारी रकम चुकाने को तैयार रहते है। इस वजह से कोचिंग संस्थानों का शिक्षा के नाम पर व्यवसाय फल-फूल रहा है। अत्यधिक फीस की वजह से विद्यार्थीयों पर आवश्यक मानसिक दबाव रहता है, जिस कारण वे सही से पढ़ाई नहीं कर पाते है और उचित परिणाम भी नहीं दे पाते और फलस्वरूप अवसाद के शिकार हो जाते है। कहीं-कहीं तो आत्महत्या तक कर लेते है। मगर इससे इन संस्थानों पर कोई असर नहीं पड़ता। उन्हें तो उनकी फीस से मतलब होता हैं जो पहले ही मिल चुकी होती है। इसके भयंकर दुष्परिणाम देखने को मिल रहे है। **शिक्षा अब ज्ञानार्जन ना रह कर मात्र धनोपार्जन का साधन बन गया है। विद्यार्थी को बस किसी तरह नौकरी मिल जाए, उतना ही पढ़ते हैं। कार्यक्षमता और मानसिक विकास, की नींव कमजोर होती जा रही है।**

सरकार भी इस दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठा रही है, न ही सरकारी स्कूलों और प्राथमिक शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए ठोस कदम उठा रही है। फलस्वरूप हमारी आने वाली पीढ़ी का बौद्धिक विकास नहीं हो रहा है वह मात्र पैसे कमाने वाली मशीन बनती जा रही है। अतः इस दिशा में अभिभावक, छात्र और सरकार तीनों को मिलकर प्रयास करना चाहिए तभी कुछ सार्थक होगा।

शिक्षा के व्यवसायिकरण को रोकने का कार्य कोई एक व्यक्ति, परिवार नहीं इसके साथ समाज और देश सभी को मिलकर दायित्व निभाना होगा। शिक्षा हो या शिक्षालय अथवा उसके सभी अंग को सकारात्मक दृष्टि रख निर्विवाद निर्णय लेने होंगे। भारत और इंडिया जैसी दीवार खड़ी करने वालों पर हाथी के चालक सा अंकुश चलाना पड़ेगा। शिक्षा का उद्देश्य और सार्थकता तभी पूर्ण होगी जब उससे निकला बालक पहले देश, फिर धर्म या जाति वर्ग के बारे में सोचना आरंभ कर देगा। धर्म और मजहब स्टंट कम, विश्वास की परंपराओं का रूप बन कर अधिक उभरेगा। इसमें सबसे बड़ा दायित्व विविध सरकारों का है जिन्हें देश के विविध विद्यालयों में लागू होने वाले पाठ्यक्रम के बारे में निरपेक्ष निर्णय लेना है। शिक्षक और शिक्षार्थी के दायित्व व अधिकारी को सुनिश्चित करना होगा। साथ ही राज्य हो या केन्द्र की सरकार, उसे इस व्यवसाय से अगाध लूट करने वालों के लिए कठोर व गैर जमानती दण्ड का कानूनी प्रावधान करना होगा। समाज के हर वर्ग के लिए असहयोग की स्थिति में समस्त सरकारी लाभों या सुविधाओं से वंचित करने का प्रावधान बनाना होगा। इस माध्यम से कहीं पर भी किसी को भी कट्टरता फैलाने की अनुमति न होगी।

शिक्षा का व्यवसायीकरण को रोकने में कुछ कठोर उपाय करने होंगे। जो कटुक औषधि की भांति गंभीर रोग हरण के लिए, समाज व देश के लिए योग्य चरित्रवान व संस्कारवान नागरिकों के निमार्ण के लिए, विश्व के साथ हर स्तर पर कदम से कदम मिलाकर खड़े होने के लिए आवश्यक है और वह भी दिखावटी या सतही तौर पर नहीं यर्थाथ व प्रभावी विधि विधानों से युक्त हो। तभी सफलता की आशा की जा सकती है।

प्रतीक कुमार झा
कार्यपालक अभियंता, भू-संपदा विभाग

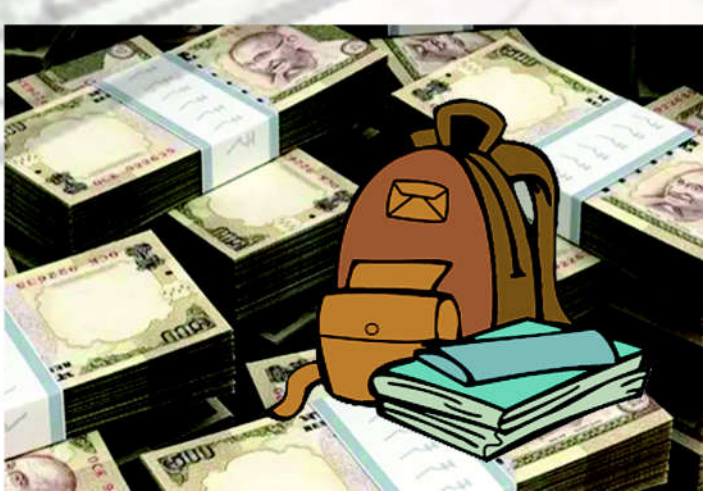

हमारे जीवन पर इंटरनेट व मोबाइल फोन का प्रभाव

आज की इस आधुनिक युग में इंटरनेट और मोबाइल फोन ने मनुष्य के जीवन को बहुत ही सरल और ज्ञानवर्धक बना दिया है। मनुष्य जीवन को इन दो प्रौद्योगिकी ने सार्वाधिक प्रभावित किया है तथा पुरी तरह से बदल दिया है। हमें इंटरनेट और मोबाइल फोन प्रौद्योगिकी को धन्यवाद करना चाहिए क्योंकि आज हम इन्हीं की मदद से देश दुनिया से जुड़ पा रहे है और विश्व के कोने-कोने का ज्ञान गांव-गांव तक पहुंच पा रहा है। ये दोनों आज के समय में सबसे उपयोगी एवं जरूरी वस्तु हो गई है और आज के समय में मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन बन गए हैं।

इंटरनेट व मोबाइल फोन के उपयोग से लाभ

इन दो प्रौद्योगिकी के लाभ की बात करे तो, कई सारे लाभ है और आज भी मनुष्य इन दो प्रौद्योगिकी के लाभों का अन्वेषण कर रहा है। इन में से कुछ लाभ नीचे उल्लेखित किये गए है।

(1) **बात करने के लिए सुगम :** हम दुनिया के अगर किसी भी कोने में हो तो हम किसी से भी बात कर सकते है, इसको कहीं पर भी ले जाया जा सकता है।

(2) **मनोरंजन का साधन :** मोबाइल फोन बात करने के साथ-साथ मनोरंजन का भी साधन है इसमें हम वीडियों देख सकते है, गाने सुन सकते है, पूरी दुनिया के समाचार पत्र पढ़ सकते है और अन्य जानकारियां भी ले सकते है।

(3) **सुरक्षा के लिए उपयोग :** स्मार्टफोन में आजकल नए तरह के एप्लीकेशन आने लगे है जिनसे एक बटन दबाने से पुलिस और परिचितों तक उसकी लोकेशन के साथ सूचना पहुंच जाती है।

(4) **व्यापार बढ़ाने में सहायक :** वर्तमान में पूरी दुनिया का व्यापार लगभग इंटरनेट व मोबाइल फोन से ही चल रहा है।

(5) **वीडियों और फोटोग्राफी करने के लिए :** अब मोबाइल फोन की सहायता से हम कितनी भी फोटो खींच सकते है और वीडियों बना सकते है, साथ ही इन विडियों और फोटो को हम कहीं पर भी सेव करके रख सकते हैं और भविष्य में जरूरत पड़ने पर ही इसे फिर से देख सकते है।

(6) **कमाई का साधन :** आजकल इंटरनेट कमाई का साधन भी बन गया है कई युवा लोग मोबाइल फोन से वीडियों बनाकर एप्लीकेशन और अन्य प्रकार की गतिविधियां कर कमाई कर रहे है।

(7) **बैंकिंग की सुविधा :** वर्तमान में हमें किसी भी बैंक में जाने की जरूरत नहीं पड़ती है अगर हमें कोई वस्तु खरीदनी होती है तो हम मोबाइल फोन की सहायता से ही लेन-देन कर सकते है।

इंटरनेट व मोबाइल फोन के दुष्परिणाम

इंटरनेट व मोबाइल फोन के जितने लाभ है, वर्तमान में उतने ही इसके दुष्प्रभाव भी बढ़ते जा रहे है, जिस पर अगर जल्द ही ध्यान नहीं दिया गया तो भविष्य में हमें घातक परिणाम देखने को मिल सकते है।

(1) **लत लगाना :** आजकल इंटरनेट व मोबाइल फोन का इस्तेमाल इतना अधिक बढ़ गया है कि लोगों को इसकी लत लग गई है वह बार-बार बिना किसी काम के भी इसका इस्तेमाल कर रहे है।

(2) तलाक : इंटरनेट व मोबाइल फोन का इस्तेमाल आजकल लोग इतना करने लगे है कि वह एक दूसरे से बातचीत नहीं करते है और एक दूसरे को समय भी नहीं देते है जिस कारण वर्तमान में तलाक की वजह भी बन रहे है।

(3) बीमारियों का शिकार होना : अत्यधिक इस्तेमाल से सिर दर्द, याददाशत कमजोर होना, आंखे कमजोर होना, डिप्रेशन का शिकार होना, अनिद्रा, बहरापन जैसी बहुत ज्यादा घातक बीमारियां हो गई है।

(4) दुर्घटना : लोग स्मार्टफोन का इस्तेमाल बहुत ज्यादा करने लगे है जिसके कारण भी वाहन चलाते समय, सड़क पर चलते समय या फिर कोई कार्य करते समय भी इसका इस्तेमाल करते रहते है जिसके कारण दुर्घाटनाएं बढ़ रही है।

(5) बच्चों के लिए हानिकारक : एक रिसर्च के अनुसार वर्तमान में 78% बच्चे 4 घंटे से ज्यादा मोबाइल फोन का इस्तेमाल कर रहे है जिसके कारण 41% बच्चों को सिरदर्द, अनिद्रा, चक्कर आना जैसी बीमारियां हो गई है।

(6) कैंसर जैसी बीमारियां होना : कुछ रिसर्च के अनुसार पता चला है कि मोबाइल फोन से निकलने वाले रेडिएशन के कारण कैंसर जैसी बीमारियां भी हो सकती है।

इंटरनेट व मोबाइल फोन के दुष्परिणाम से बचने के उपाय

(1) मोबाइल में फालतू एप्लीकेशन हटाए : मोबाइल से फालतू एप्लीकेशन डाल कर रखते है जिसके कारण हम पूरे दिन उनके नोटिफिकेशन पढ़ते रहते है और उन्हीं को चलाने में व्यस्त रहते है।

(2) सोशल मीडिया पर कम समय बिताएं : वर्तमान में ज्यादातर लोग सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते है और एक छोटा नोटिफिकेशन आने पर ही सोशल मीडिया की साइट खोल कर उस पर कई घंटे बिता देते हैं।

(3) घर आने पर मोबाइल फोन का इस्तेमाल ना करें : ऑफिस से आने के बाद घर में अपने स्मार्टफोन का इस्तेमाल ना करें क्योंकि इसके कारण आप अपनी परिवार वालों को समय नहीं दे पाते है और रिश्तों में दूरियां बढ़ती है इसलिए घर पर फोन का इस्तेमाल कम करें।

(4) सुबह शाम घूमने जाएं : सुबह शाम घूमने का प्रण करें जिससे आपको वातावरण की सुंदरता देखने को मिलेगी और कुछ समय के लिए आप स्मार्टफोन से दूर रहेंगे जिससे आपका मन भी शांत होगा और साथ में शरीर भी तंदुरुस्त रहेगा।

उपसंहार

"जीवन में किसी चीज की अधिकता जहर समान है"

इंटरनेट व मोबाइल फोन का अगर सही से इस्तेमाल किया जाए तो यह किसी वरदान से कम नहीं है लेकिन अगर इसका अत्यधिक इस्तेमाल किया जाए तो यह बीमारियों का घर है और आपको दुनिया से अलग कर देता है।

इंटरनेट व मोबाइल फोन का इस्तेमाल करें और इससे कुछ सीखें लेकिन इसको अपनी जिंदगी ना बनाएं।

विनय संजय सुले
कार्यपालक अभियंता, तोयालिकी अध्ययन विभाग

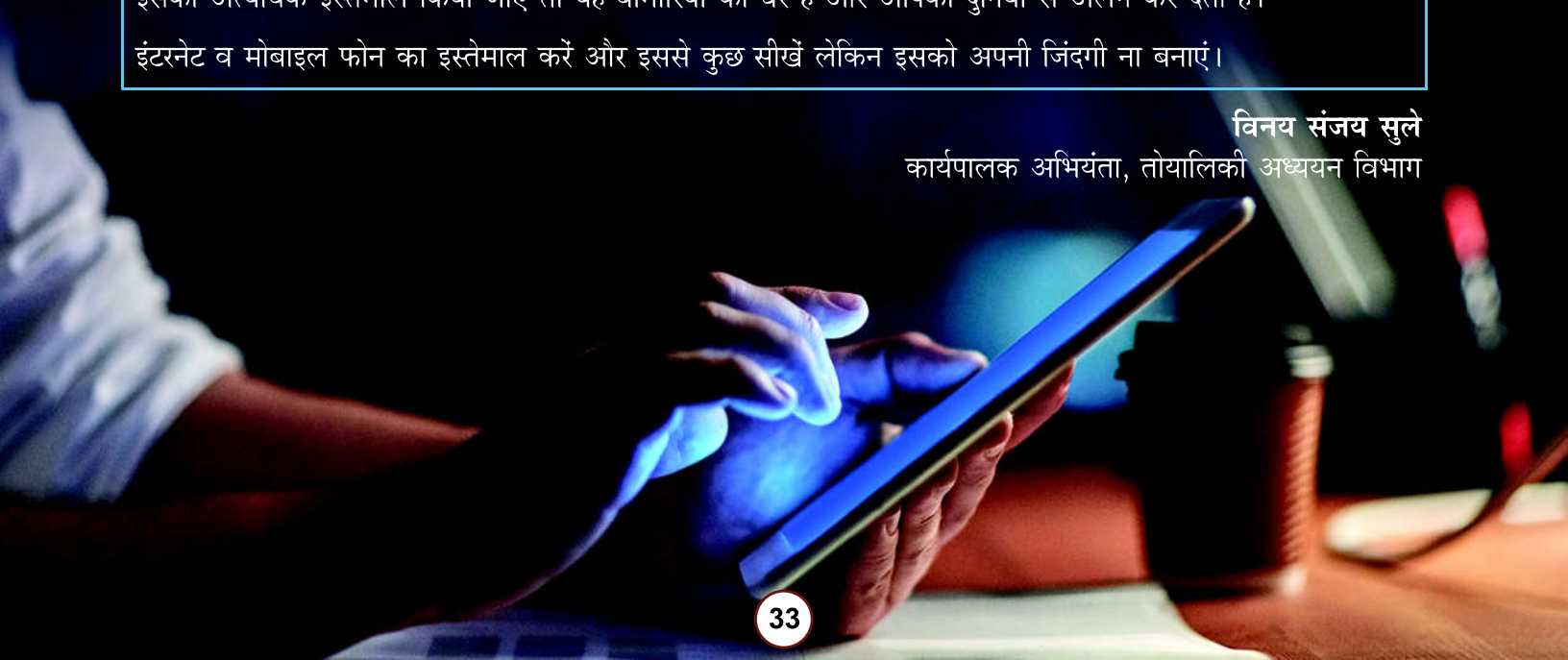

चुनौतियाँ

मानव संस्कृति सदा ही विकासशील प्रवृत्ति की ओर उन्मुख रही है। विज्ञान के इस भौतिकवादी युग में मनुष्य ने अपने जीवन को समृद्ध बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के आविष्कार किए और उन आविष्कारों में 'संचार माध्यम' भी प्रमुखता के साथ उभर कर आया। यह सर्वविदित है कि संचार माध्यम का मुख्य कार्य सूचना प्रदान करना है और इस माध्यम ने सम्पूर्ण विश्व को **"ग्लोवल विलेज"** के रूप में परिणत किया ।

वास्तव में मीडिया 'पत्रकारिता' का ही सर्वोत्तम रूप में माना जाता है, जिसका मुख्य कार्य जनतांत्रिक पद्धति के माध्यम से समाज में चेतना का प्रसार कर जन-मानस को बौद्धिकता की कसौटी पर पहुंचाना है। यह भी सर्वविदित है कि स्वतंत्रता-पूर्व भारत में पत्रकारिता ही जन-मानस की आवाज हुआ करती थी, जिसके बल पर 'पराधीनता' से 'स्वाधीनता' की यात्रा हमने पूरी की। उस दौर के प्रमुख पत्रकारों ने अपनी लेखिनी के माध्यम से न केवल हमें स्वाधीन बनाया, वरन हमारी बौद्धिक चेतना को संवर्धित कर हमें रूढ़िबद्ध परम्पराओं से मुक्त किया। किन्तु आजाद भारत में प्रवेश कर पत्रकारिता का स्वरूप बिलकुल ही विपर्यय था। खासकर यह उस दौर की बात है जब 'वैश्विक उदारीकरण' या Global Liberalisation बहुत ही तीव्र गति से भारत में प्रवेश कर रहा था, ऐसी संक्रमणकालीन परिस्थिति में जनोन्मुखी पत्रकारिता, अर्थोन्मुखी पत्रकारिता में तबदील हो गई, जोकि यह हमारे देश की सबसे बड़ी विडंबना है। किसी विख्यात पत्रकार ने ठीक ही कहा है कि -- **"पत्रकारिता जब प्रोडक्ट में तबदील हो जाएगी, तो उसके सरकार की नहीं बल्कि बाजार की जरूरत पड़ेगी"** यह कथन सत्य भी है क्योंकि आज पत्रकारिता के मुख्य विषय आम-जन की समस्याओं से संबन्धित न रहकर, वह आकर्षक प्रोडक्टों की तस्करी करने में ही अपनी महानता समझता है और यही कारण है कि आज देश के बड़े-बड़े **'स्टार एंकर'** कॉर्पोरेट कंपनियों और पूँजीपतियों के दलाल बनकर बैठे हुए हैं।

वास्तव में पत्रकारिता न केवल जनतांत्रिक पद्धति को आगे बढ़ाने का माध्यम था बल्कि देश की कार्यपालिका, न्यायपालिका और व्यवस्थापिका के पश्चात इसे जनतंत्र का चौथा स्तम्भ या Fourth Estate माना जाता था। पत्रकारों की **'निर्भीकता'** ही आम जनता का संबल हुआ करती है, क्योंकि आम-जन भी इस बात से विदित है कि अगर देश कि शासन-व्यवस्था उनके साथ न्याय नहीं कर पायी, तो पत्रकार उनकी समस्याओं का समाधान करने के लिए सदा तत्पर रहेंगे। कभी एक दौर था, जब पत्रकार संसाधनों के अभाव में भी अपनी बात जनता तक शीघ्र ही पहुंचाते थे, किन्तु आज भरपूर संसाधन के होते हुए भी वे सनसनीखेज खबरें जनता की थाली में परोस रहें है। पत्रकारों का यह महज दायित्व होना चाहिए कि उनके द्वारा प्रसार की जाने वाली खबरें आम-जन के लिए लाभकारी और ज्ञानोन्मुखी हो, नहीं तो सांप्रदायिकता के नाम पर होने होने वाली वारदातें हमेशा समाज में गूँजती रहेगी और हमारी एकीकृत भावना, विकृति का रूप धारण कर लेगी।

वर्तमान पत्रकारिता केवल वैचारिक स्तर पर ही नहीं, भाषिक स्तर पर भी न्याय नहीं कर पा रही है। 'हिंगलिश' के कांसेप्ट ने हमारी मात्रभाषा की अस्मिता को भी धूमिल किया है। इस विचारधारा के लिए पूर्ण-दोष पत्रकारिता के सर नहीं मढ़ा जा सकता है किन्तु संचार के जो माध्यम हमारे दैनंदिनी जीवन के अभिन्न अंश बन चुके है, उन्होंने ही हमें 'नयी भाषा या हिंगलिश' को अपनाने के लिए विवश किया।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि, जनतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में पत्रकारों का दायित्व यह होना चाहिए कि वह अर्थ-हितैषी के रास्ते न चलकर जन-हितैषी का मार्ग अपनाएं, क्योंकि जब तक पत्रकार सत्यता कि कसौटी पर खड़े उतरकर पत्रकारिता नहीं करेंगे, तब तक कोई भी देश विकास के उच्चतम सोपनों पर नहीं पहुँच सकता है और **'निर्भीकता'** को बनाए रखना ही लोकतंत्र की सटीक परिभाषा मानी जाती है। वरना किसी ने ठीक ही कहा है कि **'एक डरा हुआ पत्रकार लोकतंत्र में मरा हुआ नागरिक पैदा करता है'** अतः इन्हीं चुनौतियों को पार कर हिन्दी पत्रकारिता अपनी साख सर्वथा बनाए रख सकती है।

शुभम साव, हिन्दी सहायक

अनमोल वचन

(1) नीतिशास्त्र में लिखा है कि आपत्ति से बचने के लिए "धन" की रक्षा करनी चाहिए किन्तु अपने पर विपत्ति आ जाए तो सब कुछ देकर भी अपनी रक्षा करनी चाहिए। (2) अगर आप ऐसा कहेंगे कि अच्छा गुरु कोई है ही नहीं। तो गुरु भी कहेंगे कि कोई अच्छा शिष्य है ही नहीं। आप शिष्य की योग्यता प्राप्त करें तो आप को सदगुरु की योग्यता, महत्ता दिखेगी और समझ में आयेगी। (3) जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरूरत है, डिग्री की नहीं। हमारी-आपकी डिग्री है कल्याण हेतु यथासम्भव प्रयत्न, असहाय तथा दीन-दुखियों के प्रति दया, परोपकार का भाव, अतिथि सत्कार, वयोवृद्ध और नारी मात्र के प्रति दया और आदर का भाव, दान देने में सुख का अनुभव और हमारी नम्रता। अगर यह डिग्री नहीं मिली, अगर हमारी आत्मा अन्दर से जागृत नहीं हुई, तो कागज की डिग्री बेकार (व्यर्थ) है।

भानूप्रिय दास, सुपुत्री विश्वेश्वर कुमार दास,
चिकित्सा विभाग

शिक्षा का अर्थ

शिक्षा का अर्थ है -- सीखना गुरु से ज्ञान प्राप्त करना। विद्या ग्रहण करना। इतिहास सबूत है। 'ऋग्वेद और महाभारत' में भी शिक्षा शब्द का प्रयोग किया गया है। शिक्षा के लिए भारतीय शास्त्रों में 'विद्या' शब्द का प्रयोग आमतौर पर किया गया है। विद्या शब्द की रचना 'विद्' धातु से हुई है। जिसका माने है 'जानना'। इस तरह विद् या (विद्या) शब्द का अर्थ है, 'ज्ञान' अर्थात विज्ञान से ज्ञान होता है। विज्ञान पढ़ने के फलस्वरूप अपनी कल्पना शक्ति से उपसर्ग 'वि' को अलग कर देने से मुझे 'ज्ञान' मिल जाता है। दिमाग से अंधविश्वास दूर हो जाता है। शिक्षा मानव सभ्यता की आधार शिला है। तात्पर्य है कि जब बच्चा शिक्षा प्राप्त करता है तब उसके दिमाग में आध्यात्मिकता की भावना स्वयं विकसित होती है और अध्यात्मजनित सभी गुण पूर्णता की ओर विकास करने लगते है। अच्छी शिक्षा द्वारा मानव की आध्यात्मिकता जब जाग उठती है, तब मानव जीवन में 'सत्यम शिवम् सुंदरम' की शुभ प्रतिष्ठा होती है।

शिक्षा से मेरा अभिप्राय यह है कि व्यक्ति जन्म काल से लेकर मृत्यु पर्यन्त विभिन्न परिस्थितियों में जीवन-यापन करता है। हमारे जीवन में परिस्थितियां सहायक और बाधक दोनों प्रकार के प्रभावों को जन्म देती है। परिस्थितियों के रूप भी अनेक प्रकार के होते है। यथा -- सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय इत्यादि। शिक्षा की सहायता से शिशु, युवा और प्रौढ़ आदि अवस्थाओं के व्यक्ति उन परिस्थितियों के साथ स्वयं को समायोजित करने की चेष्टा करते हैं। अनुकूल वातावरण में ही व्यक्ति का विकास संभव है और इस अनुकूलता के सृजन में 'शिक्षा की महत्वपूर्ण' भूमिका होती है। संक्षेप में -- शिक्षा मानव का जन्म सिद्ध अधिकार है।

अमित कुमार दास, सुपुत्र- विश्वेश्वर कुमार दास
चिकित्सा विभाग

स्वच्छता

स्वच्छता का सीधा संबंध हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ है। यह हमारी व्यवहार और आदतों में शामिल होना चाहिए। यह न केवल हमारे घर आँगन तक ही समिति हो बल्कि इसका दायरा विस्तृत होना चाहिए तभी हमारा देश स्वच्छ बनेगा। महात्मा गांधी ने स्वच्छता को ईश्वर भक्ति के बराबर माना और स्वच्छता की शिक्षा सभी को प्रदान की। उनका सपना था कि सभी नागरिक देश को साफ और स्वच्छ रखने के बारे में सोचे। गांधी जी के इसी सपने को एक अभियान के रूप में 2 अक्तूबर, 2014 को उनके 145 वीं जयंती के अवसर पर राजघाट से शुरू की गई। इस अभियान के जरिए महात्मा गांधी के 150वीं जयंती 2 अक्तूबर, 2019 तक भारत को स्वच्छ राष्ट्र के रूप में परिणत करने की परिकल्पना भारत सरकार ने की थी।

यह एक गैर राजनीतिक अभियान था जो देशभक्ति से प्रेरित था। भारत को स्वच्छ राष्ट्र के रूप में परिणत करने के लिए प्रत्येक देशवासी को दायित्वशील बनाना इसका उद्देश्य था। इस अभियान ने स्वच्छता के लिए विश्व समुदाय को प्रेरित किया है। इस अभियान का उद्देश्य था-

(2) लगभग 11 करोड़ 11 लाख व्यक्तिगत, सामूहिक शौचालयों का निर्माण करवाना।

(3) उचित स्वच्छता का उपयोग करके लोगों की मानसिकता को बदलना।

(4) शौचालय उपयोग को बढ़ावा देना और सार्वजनिक जागरूकता शुरू करना।

(5) गांव को साफ रखना।

(6) 2019 तक सभी घरों में पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करके गाँवों में पाइपलाइन लगवाना।

(7) ग्राम पंचायत के माध्यम से ठोस और तरल अपशिष्ट की अच्छी प्रबंधन व्यवस्था सुनिश्चित करना।

बस्तियों को साफ रखना।

स्कूलों के शिक्षक और विद्यार्थियों ने स्वच्छ भारत अभियान में उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसमें सरकारी कर्मचारियों के साथ-साथ जनसाधारण ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और जन जागरूकता विकसित हुई। इसके तहत स्वच्छता के एक अन्य अभियान की शुरूआत उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, योगी आदित्य नाथ ने की। उन्होंने मार्च, 2017 से गुटखा, पान-मसाला और अन्य तंबाकू उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया। इसी क्रम में, 14 सितंबर से 2 अक्तूबर, 2019 तक प्रधानमंत्री ने 'स्वच्छता ही सेवा' नामक अभूतपूर्व अभियान की शुरूआत की, जिसका उद्देश्य स्वच्छता को जन आंदोलन में परिणत कर महात्मा गांधी के सपनों को पूरा करना था।

स्वच्छता ही सेवा में मुख्य बिन्दु

इस वर्ष 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन पर आधारित था। स्वच्छता ही सेवा, 2019 का मकसद था 11 सितंबर और 1 अक्तूबर के बीच प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन के प्रति जन जागरूकता उत्पन्न करना। अभियान के अंतिम दिन तक जागरूकता विकसित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम किए गए जिसमें प्लास्टिक अपशिष्ट इकट्ठा करना और पृथक करने के लिए श्रमदान करना, एकत्रित किए गए प्लास्टिक का रिसाइकिल किया जाना और 27 अक्तूबर, 2019 को दीपावली से पहले प्रभावी रूप से निपटाया जाना। विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को शौचालयों के निर्माण और साफ-सफाई तथा खुले में शौच से देश को मुक्त करने के लिए स्वैच्छिक श्रमदान देना शामिल था। कार्यक्रम इस प्रकार थे --

प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन पर जन जागरूकता कार्यक्रम : **11 सितंबर, 2019 से 1 अक्तूबर, 2019**

प्लास्टिक अपशिष्ट एकत्रित करना : **2 अक्तूबर, 2019**

एकत्रित प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रभावी निपटान : **3 अक्तूबर, 2019 से 27 अक्तूबर था**

सवा सौ करोड़ वाले भारत देश में महिम को चलाना एवं भलि-भांति इसका संपादन करना एक बहुत बड़ी चुनौती थी। हमें इस बात का गर्व है कि भारत सरकार इसमें सफल हुई, क्योंकि इस अभियान ने जन भावना का रूप जो ले लिया है। यह एक ऐसी पहल है जिसमें हर जाति, वर्ग और धर्म के लोगों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और इसे सफल भी बनाया। इस अभियान ने लोगों के दिलों में स्वच्छता की वो मशाल जला दी है जो अब बुझने वाली नहीं है। अब यह हमारे जीवन का हिस्सा बन चुका है।

नीलू सिंह, आशुलिपिक

आपके पत्र

पत्तन भारती का नवीनतम अंक पाकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। पत्तन के इस अंक में सरल भाषा में विविध विषयों पर सामग्री शामिल की गई है। श्री गौतम मुखर्जी, सुरक्षा सलाहकार के लेख क्रूज लाइनर का कोलकाता पत्तन में आगमन और श्रीमती एस. प्रधान, सचिव का लेख समुद्री अभिलेखागार और विरासत केन्द्र बहुत ही रोचक एवं उपयोगी है। सुश्री मिताली घोष, उप श्रम सलाहकार व औद्योगिक संपर्क अधिकारी के सतर्कता संबंधित कुछ अनुभव नामक लेख बहुत ही ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी है।

श्री एमानुएल सिंह, भंडारण/क्रय अधिकारी द्वारा लिखी गई कविता "प्यार का शहर" एक समसामयिक कविता है । डॉ0 कुन्तल दास, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी ने डेंगू ज्वर के संबंध में जानकारी देकर समाज की सेवा की है।

पत्रिका की साज-सज्जा तथा विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण निस्संदेह उत्कृष्ट कोटि का है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल तथा इसके प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारी बधाई के पात्र है।

श्री सुनील कुमार
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)
पोत परिवहन मंत्रालय, परिवहन भवन,
1, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110 001

आपकी पत्रिका पत्तन भारती प्राप्त हुई, पढ़ने के बाद मन को इतना अच्छा लगा कि तत्काल प्रतिक्रिया भेजने को विवश हो गया। सच कहा जाए तो पत्रिका सर्वांगीण समृद्धि का परिचय देती है। रूप, रंग और आकार सभी दृष्टिकोण से कलेवर आकर्षक है। विषय सामग्री में कादंबिनी गांगोपाध्याय का परिचय रोचक और ज्ञानवर्धक लगा। अँग्रेज़ी में प्रयुक्त विदेशी अभिव्यक्तियां और उनके हिन्दी पर्याय बहुत ही ज्ञानवर्धक है। भविष्य में इस प्रकार की रोचक और ज्ञानवर्धक सामग्री को स्थान देने का प्रयास करिएगा। अन्य सभी कार्मिकों के लेख, कहानी, कविताएँ एवं छवियां सराहनीय है। एक उत्कृष्ट पत्रिका के संपादन हेतु बहुत-बहुत बधाई ।

श्री कृष्णा नंद दीक्षित
राजभाषा अधिकारी,
कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय
न्यू इंडिया एश्योरेंश

पत्तन भारती हिन्दी गृह पत्रिका की प्रति हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। इसमें समाविष्ट सभी रचानाएँ अत्यंत रोचक, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। सुंदर और जानकारी पूर्ण पत्रिका के सफल संपादन के लिए समस्त संपादक मंडल को कोचिन पोर्ट ट्रस्ट की हार्दिक बधाईयां।

श्री सूसन वर्गीस
सहायक सचिव ग्रेड-I (राजभाषा)
कोचिन पोर्ट ट्रस्ट

पत्रिका में प्रकाशित अंग्रेजी में प्रयुक्त विदेशी अभिव्यक्तियां और उनके हिन्दी पर्याय बहुत ज्ञानवर्धक और उपयोगी है। पत्रिका के साज-सजावट अत्यंत आकर्षणीय है। पत्रिका के प्रकाशन से जूड़े सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

श्री गिरिजा टी. पी.
प्रबंधक (राजभाषा)
कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

कोलकाता पत्तन न्यास द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका पत्तन भारती कार्यालय को प्राप्त हुई। पत्रिका भेजने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। पत्रिका की सभी रचानाएँ पठनीय एवं रोचक है। पत्रिका की साज-सज्जा सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित लेख सतर्कता संबंधी कुछ अनुभव अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की ओर से संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

अनीता गोस्वामी
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

कुछ अन्य गतिविधियां

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अध्यक्ष का अभिभाषण
साथ में वरिष्ठ कमांडेंट श्री एम. के. यादव परिलक्षित है

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में अध्यक्ष श्री विनीत कुमार द्वारा वृक्षारोपण

एसएमपी, कोलकाता ने श्री ए. के. मेहरा नए उपाध्यक्ष का
गर्मजोशी से स्वागत किया

कोविड 19 रोगियों के इलाज में मदद के लिए श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट,
कोलकाता के सेंटेनरी अस्पताल में आयोजित प्लाजमा डोनेशन कैंप

सेंटेनरी अस्पताल में प्लाजमा डोनेशन कैंप में एक चिकित्सक सहित केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवानों ने प्लाज्मा दान दिया

त्रिपुरा के माननीय मुख्यमंत्री, श्री बिप्लब कुमार देब ने चटोग्राम पोर्ट के
माध्यम से अगरतला में पारगमन माल की पहली यातायात का स्वागत किया।
16 जुलाई, 2020 को एसएमपी कोलकाता से पहली बार इसके रवानगी
के लिए हरी झंडी दिखाई गई थी

कोलकाता बंदरगाह से पहला परीक्षण कंटेनर जहाज एमवी शेज्योति चटोग्राम
बंदरगाह पर पहुंचा